



डिजिटल वैश्वीकरण के दौर में भारतीय समाज एवं संस्कृति में परिवर्तन: एक वर्णनात्मक अध्ययन

सन्त कुमार शुक्ल, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय चित्रकूट (उ०प्र०)-210204

डॉ. सुशील कुमार त्रिपाठी, शोध निर्देशक, अध्यक्ष: राजनीति विज्ञान विभाग
जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग राज्य विश्वविद्यालय, चित्रकूट (उ०प्र०)-210204

सारांश

इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्वीकरण का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हुआ है। इंटरनेट, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, सोशल मीडिया, डिजिटल भुगतान, ई-वाणिज्य, ऑनलाइन शिक्षा, ओटीटी प्लेटफॉर्म तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों के विस्तार ने वैश्वीकरण को एक नया डिजिटल आयाम प्रदान किया है। डिजिटल वैश्वीकरण ने भौगोलिक सीमाओं के महत्त्व को अपेक्षाकृत कम करते हुए विभिन्न समाजों और संस्कृतियों के मध्य संपर्क एवं अंतःक्रिया को व्यापक बनाया है। भारत जैसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता वाले देश में इस परिवर्तन का प्रभाव विशेष रूप से दिखाई देता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य डिजिटल वैश्वीकरण के दौर में भारतीय समाज एवं संस्कृति में उत्पन्न प्रमुख परिवर्तनों का वर्णनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में विशेष रूप से सामाजिक जीवन, पारिवारिक संबंधों, युवा वर्ग, शिक्षा, भाषा, खान-पान, पहनावे, मनोरंजन, उपभोक्ता व्यवहार तथा सांस्कृतिक मूल्यों में आए परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। डिजिटल माध्यमों ने एक ओर सूचना एवं ज्ञान तक पहुँच, संचार, शिक्षा, रोजगार तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं, वहीं दूसरी ओर उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक एकरूपता, पारंपरिक मूल्यों में परिवर्तन, डिजिटल विभाजन तथा स्थानीय सांस्कृतिक पहचान से संबंधित चुनौतियों को भी जन्म दिया है।

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन के लिए पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, विभिन्न रिपोर्टों एवं प्रासंगिक प्रकाशित सामग्री का उपयोग किया गया है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल वैश्वीकरण को केवल भारतीय संस्कृति के लिए चुनौती अथवा आधुनिकता के साधन के रूप में देखना पर्याप्त नहीं है। इसके प्रभाव बहुआयामी हैं। भारतीय समाज वैश्विक प्रभावों को ग्रहण करते हुए स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक विशेषताओं को भी नए रूप में अभिव्यक्त कर रहा है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि तकनीकी एवं वैश्विक अवसरों का लाभ प्राप्त करते हुए भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता, स्थानीय पहचान और सामाजिक मूल्यों के संरक्षण के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए।

मुख्य शब्द: डिजिटल वैश्वीकरण, भारतीय समाज, भारतीय संस्कृति, सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक परिवर्तन, सोशल मीडिया, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक पहचान।

1. प्रस्तावना

वैश्वीकरण समकालीन विश्व की उन महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं में से एक है जिसने आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। सामान्य अर्थ में वैश्वीकरण से तात्पर्य विश्व के विभिन्न देशों, अर्थव्यवस्थाओं, समाजों और संस्कृतियों के मध्य बढ़ती परस्पर निर्भरता एवं संपर्क से है। वस्तुओं, सेवाओं और पूँजी के सीमापार प्रवाह के साथ-साथ विचारों, सूचनाओं, ज्ञान, तकनीक और सांस्कृतिक प्रतीकों का आदान-प्रदान भी वैश्वीकरण की प्रक्रिया का महत्वपूर्ण अंग बन चुका है। इस प्रकार वैश्वीकरण केवल आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन से भी निकट रूप से संबंधित है।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के विकास तथा इंटरनेट के विस्तार ने वैश्वीकरण की गति और प्रकृति दोनों में महत्वपूर्ण परिवर्तन किया। इक्कीसवीं शताब्दी में स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, ई-वाणिज्य, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, ऑनलाइन मनोरंजन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों के प्रसार ने वैश्वीकरण को डिजिटल स्वरूप प्रदान किया है। इसके परिणामस्वरूप व्यक्ति की दैनिक गतिविधियाँ स्थानीय परिवेश तक सीमित न रहकर वैश्विक डिजिटल नेटवर्क से जुड़ती जा रही हैं। सूचना और विचारों का आदान-प्रदान अब अत्यंत कम समय में विश्व के एक भाग से दूसरे भाग तक संभव हो गया है।

भारत के संदर्भ में डिजिटल वैश्वीकरण का अध्ययन विशेष महत्व रखता है। भारत अपनी भाषायी, धार्मिक, क्षेत्रीय और सांस्कृतिक विविधता के लिए जाना जाता है। यहाँ परंपरा और आधुनिकता लंबे समय से साथ-साथ विद्यमान रही हैं। वैश्वीकरण और डिजिटल तकनीक के विस्तार ने इनके संबंधों को और जटिल बनाया है। वर्तमान समय में एक ओर भारतीय नागरिक वैश्विक ज्ञान, तकनीक, शिक्षा, रोजगार और बाजार से जुड़ रहे हैं, तो दूसरी ओर उनके दैनिक जीवन, सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक व्यवहार में भी परिवर्तन दिखाई दे रहा है।

विशेष रूप से युवा वर्ग पर डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव अधिक स्पष्ट है। सोशल मीडिया एवं डिजिटल मनोरंजन मंचों के माध्यम से युवा वर्ग वैश्विक संगीत, फैशन, खान-पान, भाषा और जीवनशैली से तेजी से परिचित हो रहा है। इससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान तथा नए विचारों के प्रति स्वीकार्यता में वृद्धि हुई है। साथ ही स्थानीय और वैश्विक संस्कृति के सम्मिश्रण से सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के नए रूप भी विकसित हो रहे हैं। भारतीय संगीत, योग, भोजन, फिल्मों और अन्य सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को भी डिजिटल माध्यमों से वैश्विक स्तर पर पहुँचाने के अवसर प्राप्त हुए हैं।

डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों पर भी देखा जा सकता है। मोबाइल फोन और सोशल मीडिया ने दूर रहने वाले व्यक्तियों के बीच संपर्क को सरल बनाया है, किंतु डिजिटल माध्यमों पर बढ़ती निर्भरता ने प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद की प्रकृति में भी बदलाव किया है। परिवार के सदस्यों के बीच संवाद, मित्रता, सामाजिक नेटवर्क तथा व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन की सीमाएँ डिजिटल तकनीक से प्रभावित हो रही हैं। इसी प्रकार शिक्षा के क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण सामग्री और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता ने ज्ञान प्राप्ति के नए साधन प्रदान किए हैं।

भारतीय संस्कृति पर डिजिटल वैश्वीकरण के प्रभाव को भी एकतरफा दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। वैश्विक सांस्कृतिक संपर्क ने भारतीय समाज में खान-पान, पहनावे, भाषा, मनोरंजन और जीवनशैली के नए विकल्प उपलब्ध कराए हैं। इसके विपरीत, वैश्विक उपभोक्ता संस्कृति के प्रसार ने उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों को भी बढ़ावा दिया है। वैश्विक ब्रांड, डिजिटल विज्ञापन और सोशल मीडिया के माध्यम से निर्मित जीवनशैली व्यक्ति की आवश्यकताओं, आकांक्षाओं और उपभोग व्यवहार को प्रभावित कर रही है। इसके कारण विशेष रूप से युवा पीढ़ी के जीवन में बाजार और डिजिटल मीडिया की भूमिका बढ़ी है।

एक अन्य महत्वपूर्ण प्रश्न सांस्कृतिक पहचान से संबंधित है। वैश्विक सांस्कृतिक सामग्री की आसान उपलब्धता के कारण स्थानीय भाषाओं, परंपराओं और जीवन पद्धतियों पर बाहरी प्रभाव बढ़ा है। हालांकि डिजिटल माध्यम केवल सांस्कृतिक क्षरण के कारक नहीं हैं। इन्हीं माध्यमों ने क्षेत्रीय भाषाओं, लोक कलाओं, स्थानीय खान-पान, लोक संगीत और पारंपरिक ज्ञान को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने के नए अवसर भी प्रदान किए हैं। इस प्रकार डिजिटल वैश्वीकरण स्थानीय संस्कृति के लिए चुनौती और अवसर दोनों प्रस्तुत करता है।

डिजिटल वैश्वीकरण के लाभ भी समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँचते। इंटरनेट की उपलब्धता, डिजिटल उपकरणों तक पहुँच, आर्थिक स्थिति, शिक्षा और डिजिटल साक्षरता में अंतर के कारण डिजिटल विभाजन की स्थिति उत्पन्न होती है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों तथा विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के बीच डिजिटल संसाधनों तक पहुँच की असमानता यह दर्शाती है कि तकनीकी विकास अपने आप सामाजिक समानता सुनिश्चित नहीं करता। इसलिए डिजिटल वैश्वीकरण के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करते समय अवसरों के साथ उससे उत्पन्न असमानताओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

इस पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध-पत्र डिजिटल वैश्वीकरण के दौर में भारतीय समाज एवं संस्कृति में आए परिवर्तनों का



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

वर्णनात्मक अध्ययन करता है। इसमें डिजिटल वैश्वीकरण की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए भारतीय सामाजिक जीवन, परिवार, युवा वर्ग, शिक्षा, भाषा, जीवनशैली, उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक पहचान पर इसके प्रभावों का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही इसके सकारात्मक एवं नकारात्मक पक्षों का संतुलित विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास किया जाएगा कि डिजिटल वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में भारतीय समाज वैश्विकता और स्थानीय सांस्कृतिक पहचान के मध्य किस प्रकार सामंजस्य स्थापित कर रहा है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. डिजिटल वैश्वीकरण की अवधारणा एवं उसके समकालीन स्वरूप का अध्ययन करना।
2. डिजिटल वैश्वीकरण के कारण भारतीय समाज में उत्पन्न प्रमुख सामाजिक परिवर्तनों का वर्णनात्मक विश्लेषण करना।
3. भारतीय संस्कृति, जीवनशैली, भाषा, खान-पान, पहनावे एवं मनोरंजन पर डिजिटल वैश्वीकरण के प्रभाव का अध्ययन करना।
4. युवा वर्ग तथा पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों पर डिजिटल माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना।
5. डिजिटल वैश्वीकरण के कारण विकसित उपभोक्तावादी प्रवृत्तियों एवं सांस्कृतिक पहचान से संबंधित चुनौतियों का विश्लेषण करना।
6. डिजिटल वैश्वीकरण के सकारात्मक एवं नकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों का संतुलित अध्ययन करना।
7. वैश्विक प्रभावों और भारतीय सांस्कृतिक पहचान के मध्य संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करना।

3. अनुसंधान पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र की प्रकृति वर्णनात्मक (Descriptive) है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य डिजिटल वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में भारतीय समाज एवं संस्कृति में दिखाई देने वाले परिवर्तनों का व्यवस्थित वर्णन एवं विश्लेषण करना है। शोध-पत्र में किसी विशिष्ट कारणात्मक संबंध को प्रयोगात्मक रूप से प्रमाणित करने के स्थान पर उपलब्ध तथ्यों, अवधारणाओं तथा पूर्व अध्ययनों के आधार पर सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने का प्रयास किया गया है।

यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। इसके लिए वैश्वीकरण एवं भारतीय समाज से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों, शोध-प्रबंधों, प्रकाशित रिपोर्टों तथा प्रासंगिक संस्थागत दस्तावेजों का उपयोग किया जाएगा। प्राप्त सामग्री का विषयगत आधार पर अध्ययन करते हुए डिजिटल वैश्वीकरण के सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों को विभिन्न आयामों में वर्गीकृत कर वर्णनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाएगा।

. डिजिटल वैश्वीकरण की अवधारणा एवं समकालीन स्वरूप

वैश्वीकरण की प्रक्रिया समय के साथ निरंतर परिवर्तित होती रही है। प्रारंभिक दौर में इसका संबंध मुख्यतः व्यापार, पूँजी, वस्तुओं और श्रम के अंतरराष्ट्रीय प्रवाह से था, किंतु सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने इसके स्वरूप में व्यापक परिवर्तन किया है। वर्तमान समय में इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, ई-वाणिज्य, डिजिटल भुगतान, ऑनलाइन शिक्षा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता तथा विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्मों ने वैश्विक संपर्क को अधिक तीव्र, व्यापक और सहज बना दिया है। वैश्वीकरण के इसी तकनीक-आधारित स्वरूप को डिजिटल वैश्वीकरण कहा जा सकता है।

डिजिटल वैश्वीकरण की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें भौगोलिक दूरी की बाधा अपेक्षाकृत कम हो जाती है। कोई व्यक्ति अपने स्थानीय परिवेश में रहते हुए विश्व के विभिन्न भागों से सूचना प्राप्त कर सकता है, संवाद स्थापित कर सकता है, ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त कर सकता है, वस्तुओं एवं सेवाओं का क्रय-विक्रय कर सकता है तथा वैश्विक



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

सांस्कृतिक सामग्री से जुड़ सकता है। इस प्रकार डिजिटल वैश्वीकरण ने व्यक्ति के आर्थिक जीवन के साथ-साथ उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन को भी प्रभावित किया है।

भारत में डिजिटल संपर्क का विस्तार इस परिवर्तन को स्पष्ट करता है। भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (TRAI) के अनुसार मार्च 2025 के अंत तक देश में इंटरनेट उपभोक्ताओं की संख्या लगभग **96.91 करोड़** थी, जबकि मार्च 2024 में यह लगभग **95.44 करोड़** थी। इसी अवधि में ब्रॉडबैंड उपभोक्ताओं की संख्या लगभग **94.41 करोड़** तक पहुँच गई। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यम अब भारतीय समाज के एक बड़े हिस्से के दैनिक जीवन का अंग बन चुके हैं।

डिजिटल वैश्वीकरण का विस्तार केवल तकनीकी परिवर्तन नहीं है। इसके कारण सूचना प्राप्त करने, सामाजिक संबंध स्थापित करने, मनोरंजन करने, शिक्षा ग्रहण करने, वस्तुओं की खरीदारी करने तथा विचार व्यक्त करने के तरीकों में भी परिवर्तन आया है। डिजिटल माध्यम स्थानीय व्यक्ति को वैश्विक सूचनाओं एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों से जोड़ते हैं। परिणामस्वरूप वैश्विक और स्थानीय जीवन के बीच की दूरी निरंतर कम होती जा रही है।

5. भारतीय समाज पर डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव

भारतीय समाज पर डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव बहुआयामी है। भारत एक ऐसा समाज है जिसमें ग्रामीण एवं शहरी जीवन, विभिन्न भाषाएँ, धर्म, जातीय समूह, क्षेत्रीय परंपराएँ और विविध जीवनशैलियाँ एक साथ विद्यमान हैं। इसलिए डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव सभी वर्गों और क्षेत्रों में समान रूप से दिखाई नहीं देता। फिर भी संचार, शिक्षा, परिवार, रोजगार, सामाजिक संबंध, उपभोग और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में इसके प्रभाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

5.1 सामाजिक संपर्क एवं संचार में परिवर्तन

डिजिटल वैश्वीकरण का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव सामाजिक संचार के क्षेत्र में दिखाई देता है। पहले सामाजिक संपर्क मुख्यतः प्रत्यक्ष मुलाकात, पत्र, टेलीफोन और स्थानीय सामाजिक समूहों पर आधारित था। इंटरनेट और स्मार्टफोन के प्रसार के बाद संदेश, वीडियो कॉल और सोशल मीडिया के माध्यम से संपर्क स्थापित करना अत्यंत सरल हो गया है।

इस परिवर्तन का सकारात्मक पक्ष यह है कि भौगोलिक रूप से दूर रहने वाले परिवार के सदस्य और मित्र नियमित संपर्क बनाए रख सकते हैं। विदेशों या अन्य राज्यों में रहने वाले भारतीय भी अपने परिवार और स्थानीय समुदाय से डिजिटल माध्यमों के द्वारा जुड़े रह सकते हैं। इसने सामाजिक नेटवर्क के भौगोलिक विस्तार को बढ़ाया है।

दूसरी ओर डिजिटल संचार की बढ़ती भूमिका ने प्रत्यक्ष सामाजिक संपर्क की प्रकृति में भी परिवर्तन किया है। व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण समय डिजिटल माध्यमों पर व्यतीत होने लगा है। सामाजिक संबंधों का एक हिस्सा अब आभासी मंचों पर निर्मित और संचालित होता है। इससे सामाजिकता समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उसका स्वरूप परिवर्तित हुआ है। प्रत्यक्ष और डिजिटल सामाजिक संबंध आज एक-दूसरे के समानांतर विकसित हो रहे हैं।

5.2 पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन

भारतीय समाज में परिवार परंपरागत रूप से सामाजिक संरचना की प्रमुख संस्था रहा है। डिजिटल तकनीक ने परिवार के भीतर संचार, मनोरंजन और दैनिक व्यवहार को प्रभावित किया है। परिवार के सदस्य एक ही घर में रहते हुए भी अलग-अलग डिजिटल उपकरणों और सामग्री से जुड़े रह सकते हैं। इससे पारिवारिक मनोरंजन की सामूहिक प्रकृति में परिवर्तन आया है।

इसके विपरीत, डिजिटल माध्यम परिवारों को जोड़ने का साधन भी बने हैं। रोजगार, शिक्षा अथवा प्रवास के कारण अलग-अलग शहरों और देशों में रहने वाले सदस्य वीडियो कॉल और संदेश सेवाओं के माध्यम से नियमित संवाद कर सकते हैं। इसलिए डिजिटल वैश्वीकरण को केवल पारिवारिक संबंधों को कमजोर करने वाली प्रक्रिया के रूप में देखना उचित नहीं होगा। इसने पारिवारिक संवाद के पुराने स्वरूप को परिवर्तित करते हुए संपर्क के नए साधन भी प्रदान किए हैं।

5.3 युवा वर्ग पर प्रभाव

डिजिटल वैश्वीकरण का सर्वाधिक स्पष्ट प्रभाव युवा वर्ग पर दिखाई देता है। युवा सोशल मीडिया, ऑनलाइन मनोरंजन,



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

डिजिटल शिक्षा और वैश्विक संचार मंचों से अपेक्षाकृत अधिक जुड़े हुए हैं। इसके कारण उनके विचारों, आकांक्षाओं, भाषा, पहनावे, मनोरंजन, करियर संबंधी प्राथमिकताओं और जीवनशैली पर स्थानीय तथा वैश्विक दोनों प्रकार के प्रभाव दिखाई देते हैं।

डिजिटल माध्यमों ने युवाओं को वैश्विक स्तर पर उपलब्ध ज्ञान और अवसरों से परिचित कराया है। वे ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, व्याख्यानो और डिजिटल शिक्षण सामग्री के माध्यम से अपनी जानकारी एवं कौशल का विस्तार कर सकते हैं। इसी प्रकार रोजगार, उद्यमिता और रचनात्मक गतिविधियों के नए अवसर भी डिजिटल मंचों के माध्यम से उपलब्ध हुए हैं।

इसके साथ ही सोशल मीडिया पर निर्मित लोकप्रिय जीवनशैली, सौंदर्य मानक, फैशन और उपभोग की प्रवृत्तियाँ युवाओं की आकांक्षाओं को प्रभावित करती हैं। ऑनलाइन लोकप्रियता और सामाजिक स्वीकृति के नए मापदंड भी विकसित हुए हैं। इसलिए युवा वर्ग पर डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव अवसर और चुनौती दोनों रूपों में देखा जा सकता है।

6. भारतीय संस्कृति पर डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव

संस्कृति किसी समाज की भाषा, मूल्य, विश्वास, कला, परंपरा, खान-पान, पहनावा, रीति-रिवाज और जीवन पद्धति का व्यापक स्वरूप है। डिजिटल वैश्वीकरण ने विभिन्न संस्कृतियों के बीच संपर्क को अत्यंत तीव्र बना दिया है। पहले किसी विदेशी संस्कृति से परिचय मुख्यतः यात्राओं, पुस्तकों, समाचार पत्रों, रेडियो अथवा फिल्मों के माध्यम से होता था, जबकि आज डिजिटल प्लेटफॉर्म वैश्विक सांस्कृतिक सामग्री को सीधे व्यक्ति के मोबाइल उपकरण तक पहुँचा देते हैं।

भारतीय संस्कृति के संदर्भ में इस प्रक्रिया के दोहरे परिणाम दिखाई देते हैं। एक ओर भारतीय नागरिक विश्व की विभिन्न संस्कृतियों से परिचित हो रहे हैं, वहीं दूसरी ओर भारतीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को भी वैश्विक मंच प्राप्त हुआ है। योग, भारतीय भोजन, संगीत, नृत्य, फिल्मों और विभिन्न क्षेत्रीय सांस्कृतिक परंपराओं का डिजिटल माध्यमों से व्यापक प्रसार संभव हुआ है।

अतः डिजिटल वैश्वीकरण को केवल पश्चिमीकरण के समान मानना उचित नहीं है। वर्तमान डिजिटल परिवेश में सांस्कृतिक प्रवाह बहुदिशात्मक है। भारतीय समाज विदेशी सांस्कृतिक प्रभावों को ग्रहण करता है, लेकिन साथ ही अपनी सांस्कृतिक सामग्री को भी वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत करता है।

6.1 भाषा एवं संचार शैली में परिवर्तन

भाषा संस्कृति का महत्वपूर्ण आधार है। डिजिटल वैश्वीकरण ने भारतीय भाषाओं की संचार शैली में उल्लेखनीय परिवर्तन किया है। सोशल मीडिया और त्वरित संदेश सेवाओं पर संक्षिप्त भाषा, रोमन लिपि में भारतीय भाषाओं का प्रयोग तथा हिंदी और अंग्रेजी के मिश्रित स्वरूप का उपयोग सामान्य होता जा रहा है।

इस परिवर्तन को केवल भाषा के क्षरण के रूप में नहीं देखा जा सकता। डिजिटल माध्यमों ने हिंदी सहित विभिन्न भारतीय भाषाओं को अभिव्यक्ति का नया मंच भी प्रदान किया है। क्षेत्रीय भाषा में वीडियो, ब्लॉग, समाचार, डिजिटल साहित्य और मनोरंजन सामग्री तैयार होने से स्थानीय भाषाओं की डिजिटल उपस्थिति बढ़ी है।

इस प्रकार डिजिटल वैश्वीकरण भाषा के क्षेत्र में एक विरोधाभासी स्थिति उत्पन्न करता है। एक ओर वैश्विक भाषा और मिश्रित भाषायी प्रयोग का प्रभाव बढ़ रहा है, तो दूसरी ओर स्थानीय भाषाओं को नई तकनीक के माध्यम से व्यापक दर्शक और पाठक वर्ग प्राप्त हो रहा है।

6.2 खान-पान और पहनावे में परिवर्तन

वैश्विक संपर्क के विस्तार का प्रभाव भारतीय समाज के खान-पान और पहनावे पर भी पड़ा है। डिजिटल मीडिया, विज्ञापन और ऑनलाइन सामग्री के माध्यम से विभिन्न देशों के खाद्य पदार्थों, फैशन और जीवनशैली की जानकारी आसानी से उपलब्ध हो जाती है। विशेष रूप से शहरी एवं युवा वर्ग में वैश्विक और स्थानीय खान-पान तथा पहनावे का मिश्रित स्वरूप विकसित हुआ है।

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि सांस्कृतिक परिवर्तन केवल भारतीय समाज द्वारा विदेशी संस्कृति ग्रहण करने तक सीमित नहीं है। भारतीय भोजन, वस्त्र और पारंपरिक शैलियाँ भी डिजिटल माध्यमों से देश और विदेश में लोकप्रिय हो रही हैं। इस



प्रक्रिया को स्थानीय और वैश्विक संस्कृति के सम्मिश्रण के रूप में समझा जा सकता है।

6.3 मनोरंजन संस्कृति में परिवर्तन

डिजिटल वैश्वीकरण ने मनोरंजन के स्वरूप को व्यापक रूप से परिवर्तित किया है। इंटरनेट आधारित वीडियो और अन्य डिजिटल मंचों ने दर्शकों को स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सामग्री तक आसान पहुँच प्रदान की है। इससे मनोरंजन का चयन पहले की तुलना में अधिक व्यक्तिगत और विविध हुआ है।

भारतीय दर्शक अब विभिन्न देशों की फिल्मों, संगीत और अन्य सांस्कृतिक सामग्री से आसानी से परिचित हो सकते हैं। इसी प्रकार भारतीय मनोरंजन सामग्री भी वैश्विक दर्शकों तक पहुँच सकती है। इस प्रक्रिया ने सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया है।

हालांकि वैश्विक मनोरंजन सामग्री की बढ़ती उपलब्धता स्थानीय सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के सामने प्रतिस्पर्धा भी उत्पन्न करती है। इसलिए प्रश्न केवल विदेशी प्रभाव का नहीं, बल्कि डिजिटल बाजार में स्थानीय और क्षेत्रीय सांस्कृतिक सामग्री की दृश्यता एवं संरक्षण का भी है।

7. उपभोक्तावाद एवं जीवनशैली में परिवर्तन

डिजिटल वैश्वीकरण का भारतीय समाज पर एक प्रमुख प्रभाव उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तन के रूप में देखा जा सकता है। ई-वाणिज्य, डिजिटल विज्ञापन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन भुगतान ने वस्तुओं एवं सेवाओं के चयन और खरीद की प्रक्रिया को सरल बनाया है। अब उपभोक्ता स्थानीय बाजार के साथ-साथ व्यापक डिजिटल बाजार से भी जुड़ा हुआ है।

डिजिटल विज्ञापन उपभोक्ता की पसंद और व्यवहार को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सोशल मीडिया पर लोकप्रिय व्यक्तियों और डिजिटल प्रचार के माध्यम से फैशन, सौंदर्य उत्पाद, इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, भोजन, यात्रा और जीवनशैली से संबंधित वस्तुओं की मांग प्रभावित हो सकती है। इससे उपभोग केवल आवश्यकता की पूर्ति तक सीमित न रहकर सामाजिक पहचान और जीवनशैली के प्रदर्शन से भी जुड़ा जा रहा है।

इसके सकारात्मक पक्ष में उपभोक्ता को अधिक विकल्प, जानकारी और बाजार तक पहुँच प्राप्त होती है। छोटे उद्यम और स्थानीय उत्पादक भी डिजिटल मंचों के माध्यम से व्यापक उपभोक्ता वर्ग तक पहुँच सकते हैं। वहीं नकारात्मक पक्ष में अनावश्यक उपभोग, दिखावे की प्रवृत्ति तथा बाजार-आधारित जीवनशैली को बढ़ावा मिलने की संभावना रहती है।

इस प्रकार डिजिटल वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में उपभोग के साधनों के साथ-साथ उपभोग से जुड़े सामाजिक अर्थों में भी परिवर्तन किया है।

8. डिजिटल वैश्वीकरण और सांस्कृतिक पहचान

डिजिटल वैश्वीकरण के संदर्भ में सांस्कृतिक पहचान एक महत्वपूर्ण विषय है। वैश्विक सामग्री तक निरंतर पहुँच व्यक्ति को अनेक प्रकार की जीवनशैलियों और सांस्कृतिक मूल्यों से परिचित कराती है। इससे विशेष रूप से युवा पीढ़ी के व्यवहार और अभिव्यक्ति में वैश्विक प्रभाव दिखाई देना स्वाभाविक है।

किन्तु सांस्कृतिक पहचान को स्थिर अवधारणा नहीं माना जा सकता। संस्कृति समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती रहती है। भारतीय समाज ने ऐतिहासिक रूप से विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों को ग्रहण करके उन्हें स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप परिवर्तित किया है। डिजिटल वैश्वीकरण के वर्तमान दौर में भी यही प्रक्रिया नए रूप में दिखाई देती है।

सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों पर लोकगीत, लोकनृत्य, क्षेत्रीय व्यंजन, पारंपरिक वस्त्र, स्थानीय त्योहार और क्षेत्रीय भाषाओं से संबंधित सामग्री का प्रसार यह दर्शाता है कि डिजिटल तकनीक स्थानीय सांस्कृतिक पहचान को अभिव्यक्ति का माध्यम भी प्रदान कर सकती है। इसलिए डिजिटल वैश्वीकरण और सांस्कृतिक पहचान के संबंध को संघर्ष के साथ-साथ अनुकूलन एवं पुनर्निर्माण की प्रक्रिया के रूप में समझना अधिक उपयुक्त है।

9. डिजिटल विभाजन: एक प्रमुख सामाजिक चुनौती

डिजिटल वैश्वीकरण के लाभ अभी व्यापक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकते हैं जब समाज के विभिन्न वर्गों को डिजिटल संसाधनों तक पर्याप्त और समान पहुँच उपलब्ध हो। भारत में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं का तीव्र विस्तार हुआ है, किन्तु उपकरणों की उपलब्धता, नेटवर्क की गुणवत्ता, आर्थिक स्थिति, शिक्षा और डिजिटल साक्षरता में अंतर के



कारण डिजिटल विभाजन की चुनौती बनी हुई है।

डिजिटल विभाजन केवल इंटरनेट उपलब्ध होने या न होने का प्रश्न नहीं है। किसी व्यक्ति के पास उपयुक्त उपकरण, गुणवत्तापूर्ण इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं का प्रभावी उपयोग करने की क्षमता होना भी आवश्यक है। यदि किसी वर्ग के पास इन संसाधनों का अभाव है, तो वह ऑनलाइन शिक्षा, डिजिटल रोजगार, ई-गवर्नेंस और अन्य डिजिटल अवसरों का समान लाभ नहीं उठा पाएगा।

इसलिए डिजिटल वैश्वीकरण को समावेशी बनाने के लिए डिजिटल अवसंरचना के साथ डिजिटल साक्षरता, क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री तथा समाज के वंचित वर्गों की डिजिटल पहुँच पर भी विशेष ध्यान देना आवश्यक है।

10. डिजिटल वैश्वीकरण के सकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

डिजिटल वैश्वीकरण ने भारतीय समाज में अनेक सकारात्मक परिवर्तनों को जन्म दिया है। इसने सूचना, ज्ञान, संचार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के अवसरों का विस्तार किया है। डिजिटल तकनीक के कारण व्यक्ति का संपर्क केवल अपने स्थानीय समुदाय तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि वह राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर विभिन्न समाजों, विचारों और संस्कृतियों से जुड़ने में सक्षम हुआ है।

10.1 सूचना एवं ज्ञान तक व्यापक पहुँच

डिजिटल वैश्वीकरण का एक प्रमुख सकारात्मक प्रभाव सूचना एवं ज्ञान की उपलब्धता में वृद्धि है। इंटरनेट के माध्यम से विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों और सामान्य नागरिकों के लिए विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी प्राप्त करना पहले की अपेक्षा अधिक सरल हुआ है। डिजिटल पुस्तकालय, ऑनलाइन पाठ्यक्रम, शोध सामग्री और शैक्षणिक मंचों ने ज्ञान के प्रसार को गति प्रदान की है।

विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में डिजिटल संसाधनों ने भौगोलिक दूरी की बाधा को कम किया है। दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी भी विभिन्न प्रकार की शैक्षणिक सामग्री तक पहुँच सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल वैश्वीकरण ने ज्ञान के आदान-प्रदान को अधिक व्यापक बनाया है।

10.2 सामाजिक संपर्क का विस्तार

डिजिटल संचार माध्यमों ने सामाजिक संपर्क को स्थानीय सीमाओं से बाहर विस्तारित किया है। परिवार के सदस्य, मित्र तथा विभिन्न सामाजिक समूह भौगोलिक दूरी के बावजूद एक-दूसरे से जुड़े रह सकते हैं। प्रवासी भारतीयों के लिए भी डिजिटल माध्यम अपने परिवार, भाषा और सांस्कृतिक परंपराओं से संपर्क बनाए रखने का महत्वपूर्ण साधन बने हैं।

इस प्रकार डिजिटल वैश्वीकरण ने सामाजिक संबंधों को समाप्त करने के बजाय उन्हें एक नया माध्यम और स्वरूप प्रदान किया है। व्यक्ति अब प्रत्यक्ष संबंधों के साथ-साथ डिजिटल सामाजिक नेटवर्क का भी हिस्सा है।

10.3 सांस्कृतिक आदान-प्रदान में वृद्धि

डिजिटल वैश्वीकरण ने विभिन्न संस्कृतियों के बीच संपर्क और आदान-प्रदान को बढ़ाया है। भारतीय समाज विश्व की विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं, संगीत, कला, साहित्य, भोजन और जीवनशैलियों से परिचित हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप सांस्कृतिक समझ और विविधता के प्रति जागरूकता में वृद्धि हुई है।

इसके साथ ही भारतीय सांस्कृतिक परंपराओं को भी वैश्विक स्तर पर अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हुआ है। भारतीय योग, संगीत, नृत्य, भोजन, सिनेमा तथा विभिन्न लोक परंपराओं को डिजिटल मंचों के माध्यम से व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाया जा सकता है। अतः डिजिटल वैश्वीकरण सांस्कृतिक प्रभाव की एकतरफा प्रक्रिया न होकर पारस्परिक आदान-प्रदान की प्रक्रिया भी है।

10.4 स्थानीय संस्कृति को नया मंच

डिजिटल माध्यमों ने स्थानीय और क्षेत्रीय संस्कृति के संरक्षण एवं प्रसार के लिए भी नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं। क्षेत्रीय भाषाओं में सामग्री निर्माण, लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का डिजिटल प्रस्तुतीकरण, पारंपरिक व्यंजनों और हस्तशिल्प का प्रचार तथा स्थानीय त्योहारों की ऑनलाइन प्रस्तुति इसके उदाहरण हैं।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

इससे उन सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को भी व्यापक मंच प्राप्त हो सकता है जो पहले सीमित भौगोलिक क्षेत्र तक ही पहुँच रखती थीं। इस अर्थ में डिजिटल तकनीक स्थानीय संस्कृति के संरक्षण का साधन भी बन सकती है।

10.5 सामाजिक जागरूकता एवं अभिव्यक्ति

डिजिटल माध्यमों ने नागरिकों को विभिन्न सामाजिक मुद्दों के संबंध में जानकारी प्राप्त करने और अपने विचार व्यक्त करने के नए अवसर प्रदान किए हैं। पर्यावरण, शिक्षा, महिला सशक्तीकरण, सामाजिक समानता तथा अन्य सार्वजनिक मुद्दों पर डिजिटल माध्यमों से विचार-विमर्श का विस्तार हुआ है।

विशेष रूप से युवा वर्ग के लिए डिजिटल मंच सामाजिक अभिव्यक्ति और भागीदारी के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरे हैं। इससे समाज के विभिन्न वर्गों के बीच विचारों के आदान-प्रदान की संभावनाएँ बढ़ी हैं।

11. डिजिटल वैश्वीकरण के नकारात्मक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव

डिजिटल वैश्वीकरण द्वारा उत्पन्न अवसरों के साथ अनेक चुनौतियाँ भी जुड़ी हुई हैं। भारतीय समाज में इसके प्रभावों का संतुलित अध्ययन करने के लिए इन चुनौतियों को समझना आवश्यक है।

11.1 सांस्कृतिक एकरूपता की चुनौती

वैश्विक डिजिटल मंचों पर कुछ विशेष प्रकार की जीवनशैली, मनोरंजन, फैशन और उपभोग संबंधी प्रवृत्तियों की व्यापक उपस्थिति स्थानीय सांस्कृतिक विविधता पर प्रभाव डाल सकती है। यदि वैश्विक सांस्कृतिक सामग्री का प्रभाव अत्यधिक हो जाए तो स्थानीय भाषाओं, परंपराओं और सांस्कृतिक व्यवहारों के प्रति नई पीढ़ी की रुचि प्रभावित हो सकती है।

हालांकि इसका अर्थ यह नहीं है कि भारतीय संस्कृति स्वतः समाप्त हो रही है। वास्तविक स्थिति अधिक जटिल है, जिसमें स्थानीय और वैश्विक संस्कृति एक-दूसरे को प्रभावित करते हुए नए सांस्कृतिक स्वरूप उत्पन्न कर रही हैं।

11.2 उपभोक्तावाद का विस्तार

डिजिटल विज्ञापन, ई-वाणिज्य और सोशल मीडिया ने उपभोग की प्रवृत्तियों को प्रभावित किया है। विभिन्न वस्तुओं और जीवनशैलियों का निरंतर प्रदर्शन व्यक्ति में नई आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को जन्म दे सकता है। उपभोग कई परिस्थितियों में सामाजिक प्रतिष्ठा और जीवनशैली की अभिव्यक्ति से जुड़ जाता है।

इससे विशेष रूप से युवा वर्ग में नवीन उत्पादों, फैशन और डिजिटल रूप से प्रचारित जीवनशैली के प्रति आकर्षण बढ़ सकता है। अत्यधिक उपभोक्तावाद सामाजिक मूल्यों और व्यक्ति की आर्थिक प्राथमिकताओं को प्रभावित करने की क्षमता रखता है।

11.3 पारिवारिक एवं प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद में परिवर्तन

डिजिटल उपकरणों का बढ़ता प्रयोग पारिवारिक जीवन में संवाद के स्वरूप को बदल रहा है। परिवार के सदस्य एक स्थान पर उपस्थित होते हुए भी अलग-अलग डिजिटल गतिविधियों में संलग्न रह सकते हैं। ऐसी स्थिति प्रत्यक्ष संवाद के लिए उपलब्ध समय को प्रभावित कर सकती है।

दूसरी ओर डिजिटल तकनीक दूर रहने वाले परिवारों को जोड़ती भी है। इसलिए समस्या तकनीक के अस्तित्व से अधिक उसके असंतुलित प्रयोग से संबंधित है। डिजिटल और प्रत्यक्ष सामाजिक जीवन के बीच संतुलन बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

11.4 डिजिटल विभाजन

डिजिटल वैश्वीकरण का लाभ समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से प्राप्त नहीं होता। ग्रामीण-शहरी अंतर, आर्थिक स्थिति, शिक्षा, डिजिटल साक्षरता, उपकरणों की उपलब्धता और इंटरनेट की गुणवत्ता जैसे कारक डिजिटल अवसरों तक पहुँच को प्रभावित करते हैं।

इस असमानता के कारण समाज का वह वर्ग जो डिजिटल संसाधनों का प्रभावी उपयोग करने में सक्षम है, शिक्षा, रोजगार और सूचना के नए अवसरों से अधिक लाभ प्राप्त कर सकता है। इसके विपरीत डिजिटल रूप से वंचित समूह पीछे रह सकते हैं। इस प्रकार डिजिटल विभाजन सामाजिक असमानता का नया आयाम बन सकता है।

11.5 सूचना की विश्वसनीयता की समस्या

डिजिटल माध्यमों पर बड़ी मात्रा में सूचना उपलब्ध होने के कारण विश्वसनीय और अविश्वसनीय सामग्री के बीच अंतर



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

करना एक चुनौती है। अपूर्ण, भ्रामक अथवा असत्य सूचना बहुत कम समय में व्यापक स्तर पर प्रसारित हो सकती है। ऐसी परिस्थिति में डिजिटल साक्षरता का अर्थ केवल उपकरणों का उपयोग करना नहीं, बल्कि प्राप्त सूचना की विश्वसनीयता का मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करना भी है।

12. अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष

प्रस्तुत वर्णनात्मक अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष सामने आते हैं—

1. डिजिटल वैश्वीकरण ने वैश्वीकरण की पारंपरिक प्रकृति को परिवर्तित करते हुए सामाजिक एवं सांस्कृतिक संपर्क को अधिक तीव्र बनाया है।
2. भारतीय समाज में इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल मंचों के विस्तार ने संचार, शिक्षा, मनोरंजन, उपभोग तथा सामाजिक संबंधों के स्वरूप में परिवर्तन किया है।
3. डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव युवा वर्ग पर विशेष रूप से दिखाई देता है। युवाओं की भाषा, फैशन, मनोरंजन, करियर संबंधी आकांक्षाओं और जीवनशैली में स्थानीय तथा वैश्विक दोनों प्रभाव विद्यमान हैं।
4. भारतीय संस्कृति पर डिजिटल वैश्वीकरण का प्रभाव एकतरफा नहीं है। भारतीय समाज वैश्विक सांस्कृतिक प्रभावों को ग्रहण कर रहा है, वहीं भारतीय संस्कृति भी डिजिटल माध्यमों से वैश्विक स्तर पर प्रसारित हो रही है।
5. स्थानीय एवं वैश्विक संस्कृतियों के संपर्क से सांस्कृतिक सम्मिश्रण की प्रवृत्ति विकसित हुई है। इसलिए समकालीन भारतीय संस्कृति को केवल परंपरागत बनाम आधुनिक संस्कृति के द्वंद्व में समझना पर्याप्त नहीं है।
6. डिजिटल माध्यमों ने क्षेत्रीय भाषाओं, लोक संस्कृति, स्थानीय भोजन, कला और परंपराओं को व्यापक मंच उपलब्ध कराने की संभावनाएँ उत्पन्न की हैं।
7. डिजिटल वैश्वीकरण ने उपभोक्ता व्यवहार में परिवर्तन किया है। ई-वाणिज्य, सोशल मीडिया और डिजिटल विज्ञापन उपभोग संबंधी आकांक्षाओं एवं जीवनशैली को प्रभावित कर रहे हैं।
8. डिजिटल विभाजन वर्तमान भारतीय समाज की एक महत्वपूर्ण चुनौती है। डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता के साथ उनका प्रभावी उपयोग करने की क्षमता भी डिजिटल समावेशन के लिए आवश्यक है।
9. डिजिटल वैश्वीकरण के सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों को पूर्णतः सकारात्मक अथवा नकारात्मक नहीं माना जा सकता। इसके परिणाम अवसरों और चुनौतियों दोनों के रूप में सामने आते हैं।
10. भारतीय समाज वैश्विक प्रभावों को निष्क्रिय रूप से स्वीकार करने के बजाय अनेक स्थितियों में उन्हें अपनी स्थानीय आवश्यकताओं एवं सांस्कृतिक विशेषताओं के अनुरूप परिवर्तित कर रहा है।

13. सुझाव

डिजिटल वैश्वीकरण के सकारात्मक प्रभावों को बढ़ाने तथा उससे उत्पन्न सामाजिक-सांस्कृतिक चुनौतियों को कम करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं—

प्रथम, डिजिटल साक्षरता को व्यापक बनाया जाना चाहिए। नागरिकों को डिजिटल उपकरणों के प्रयोग के साथ-साथ सूचना की सत्यता की जाँच, डिजिटल सुरक्षा तथा जिम्मेदार डिजिटल व्यवहार के प्रति भी जागरूक किया जाना आवश्यक है।

द्वितीय, ग्रामीण एवं वंचित क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता बढ़ाई जानी चाहिए, ताकि डिजिटल वैश्वीकरण से प्राप्त अवसर समाज के सीमित वर्ग तक केंद्रित न रहें।

तृतीय, भारतीय एवं क्षेत्रीय भाषाओं में गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। इससे ज्ञान की



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

पहुँच बढ़ने के साथ भाषायी विविधता के संरक्षण में भी सहायता मिलेगी।

चतुर्थ, लोक कला, लोक साहित्य, पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय इतिहास, हस्तशिल्प और क्षेत्रीय सांस्कृतिक परंपराओं का डिजिटल दस्तावेजीकरण एवं प्रसार किया जाना चाहिए।

पंचम, बच्चों और युवाओं में संतुलित डिजिटल व्यवहार को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। परिवार एवं शिक्षण संस्थान डिजिटल तकनीक के रचनात्मक उपयोग के साथ प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद, खेल, कला और सामुदायिक गतिविधियों को भी महत्व दें।

षष्ठ, डिजिटल मंचों पर उपलब्ध सूचनाओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए मीडिया एवं सूचना साक्षरता को शिक्षा का महत्वपूर्ण हिस्सा बनाया जाना चाहिए।

सप्तम, वैश्विक संस्कृति से संपर्क को सांस्कृतिक खतरे के रूप में देखने के बजाय भारतीय सांस्कृतिक विविधता को रचनात्मक ढंग से वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने के अवसर के रूप में भी उपयोग किया जाना चाहिए।

14. निष्कर्ष

डिजिटल वैश्वीकरण समकालीन वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण स्वरूप है, जिसने भारतीय समाज एवं संस्कृति को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया, डिजिटल भुगतान, ई-वाणिज्य, ऑनलाइन शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसी तकनीकों ने व्यक्ति को वैश्विक नेटवर्क से जोड़ दिया है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक संपर्क, शिक्षा, मनोरंजन, भाषा, उपभोग, पारिवारिक व्यवहार और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के स्वरूप में परिवर्तन दिखाई देता है। भारतीय समाज के संदर्भ में डिजिटल वैश्वीकरण की प्रक्रिया विशेष रूप से जटिल है, क्योंकि भारत स्वयं व्यापक सामाजिक, भाषायी और सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। डिजिटल माध्यमों के कारण भारतीय नागरिक वैश्विक संस्कृति के अधिक निकट आए हैं। युवा वर्ग में वैश्विक फैशन, मनोरंजन, भाषा और जीवनशैली का प्रभाव स्पष्ट है। इसके साथ ही भारतीय संगीत, योग, भोजन, सिनेमा, क्षेत्रीय भाषाओं और लोक परंपराओं को भी डिजिटल माध्यमों से व्यापक स्तर पर प्रस्तुत करने की संभावनाएँ विकसित हुई हैं।

अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि डिजिटल वैश्वीकरण और भारतीय संस्कृति के संबंध को केवल सांस्कृतिक क्षरण अथवा पश्चिमीकरण की दृष्टि से समझना पर्याप्त नहीं है। वैश्विक और स्थानीय तत्वों की अंतःक्रिया से भारतीय समाज में सांस्कृतिक सम्मिश्रण और नई सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ विकसित हो रही हैं। भारतीय समाज वैश्विक प्रभावों को ग्रहण करने के साथ उन्हें स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुरूप रूपांतरित भी कर रहा है।

दूसरी ओर डिजिटल विभाजन, उपभोक्तावाद, प्रत्यक्ष सामाजिक संवाद में परिवर्तन, अविश्वसनीय सूचनाओं का प्रसार और स्थानीय सांस्कृतिक पहचान पर बढ़ता दबाव ऐसी चुनौतियाँ हैं जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। तकनीकी पहुँच में वृद्धि तभी वास्तविक सामाजिक विकास में परिवर्तित हो सकती है जब उसके साथ डिजिटल साक्षरता, सामाजिक समावेशन और सांस्कृतिक जागरूकता भी विकसित हो।

अतः डिजिटल वैश्वीकरण को न तो पूर्णतः स्वीकार करने और न ही पूर्णतः अस्वीकार करने की आवश्यकता है। आवश्यकता एक संतुलित दृष्टिकोण की है, जिसमें वैश्विक ज्ञान, तकनीक और अवसरों का लाभ प्राप्त करते हुए भारतीय समाज की भाषायी विविधता, स्थानीय संस्कृति, पारिवारिक-सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक पहचान को भी सुदृढ़ किया जाए। समावेशी डिजिटल विकास और सांस्कृतिक विविधता के बीच संतुलन स्थापित करके ही डिजिटल वैश्वीकरण को भारतीय समाज के लिए अधिक सकारात्मक एवं उपयोगी बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (2025)। *व्यापक मॉड्यूलर सर्वेक्षण: दूरसंचार, 2025* (Comprehensive Modular Survey: Telecom, 2025)। नई दिल्ली: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय।
2. भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (2025)। *भारतीय दूरसंचार सेवाओं के प्रदर्शन संकेतक, 2024-25*। नई दिल्ली: TRAI, भारत सरकार।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

3. भारतीय दूरसंचार विनियामक प्राधिकरण (2025)। 31 मार्च 2025 की स्थिति के अनुसार दूरसंचार सदस्यता संबंधी आँकड़ों नई दिल्ली: TRAI, भारत सरकार।
4. मिश्रा, डी., केडिया, एम., रेड्डी, ए., रामनाथ, के. एवं वांगुरी, एस. (2025)। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था की स्थिति (SIDE) रिपोर्ट, 2025। नई दिल्ली: भारतीय अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध अनुसंधान परिषद (ICRIER)।
5. सिन्हा, प्रियम एवं मेहता, स्मिथ (2025)। “भारत में इंटरनेट-आधारित सामग्री निर्माण संस्कृति: राजनीति, दर्शक और लैंगिकता की भूमिका।” *Communication, Culture and Critique*, 18(2), 184-192। DOI: 10.1093/ccc/tcaf002।
6. श्रोएडर, राल्फ (2025)। “डिजिटल मीडिया और सामाजिक सिद्धांत: भारत और चीन के संदर्भ में एक अध्ययन।” *Digital Society*।
7. सरवताय, देविना (2025)। “भारत में किडफ्लुएंसर्स: वस्तुकरण, उपभोग और प्रभावशाली संस्कृति का विस्तार।” *Social Media + Society*, 11(3)। DOI: 10.1177/205633051251356169।
8. विश्व बैंक (2025)। डिजिटल प्रगति एवं प्रवृत्तियाँ रिपोर्ट 2025: कृत्रिम बुद्धिमत्ता की आधारभूत संरचना को सुदृढ़ करना। वाशिंगटन डी.सी.: विश्व बैंक।
9. भारत सरकार, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (2025)। डिजिटल इंडिया कार्यक्रम से संबंधित प्रगति एवं डिजिटल समावेशन रिपोर्टें नई दिल्ली: भारत सरकार।
10. चौधरी, मैत्रेयी (2024)। “भारतीय समाजशास्त्र में वैश्वीकरण: अदृश्य और अतिदृश्य आयाम।” *Diogenes*, 65(2), 276-298। DOI: 10.1017/S0392192124000014।
11. तिवारी, वत्सल एवं मिश्रा, अर्पिता (2024)। “वैश्विक और स्थानीय के बीच: भारतीय जेन-जेड उपयोगकर्ताओं की सामुदायिक पहचान के निर्माण में रेडिट की भूमिका।” *Indian Journal of Social Science and Literature*। DOI: 10.54105/ijssl.E1141.04010924।
12. मिश्रा, डी., केडिया, एम., रेड्डी, ए., रामनाथ, के. एवं मनीष, एम. (2024)। भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था की स्थिति रिपोर्ट, 2024। नई दिल्ली: भारतीय अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध अनुसंधान परिषद (ICRIER)।
13. रेड्डी, ए., केडिया, एम. एवं शुक्ला, एस. (2024)। भारत में डिजिटल भुगतान का प्रसार: फोनपे प्लस के आँकड़ों पर आधारित अध्ययन। नई दिल्ली: भारतीय अंतरराष्ट्रीय आर्थिक संबंध अनुसंधान परिषद (ICRIER)।
14. ओज़ा, एकता, विलियम्स, फिलिपा एवं कामरा, लिपिका (2024)। “भारत में डिजिटल नागरिकता, पहचान और सामाजिक संबद्धता के बदलते आयाम।” *Environment and Planning C: Politics and Space*, 42(7)। DOI: 10.1177/23996544241226813।
15. लस्कर, एम. एच. महमूदुल हसन (2023)। “भारत में डिजिटल समाज के उद्भव और डिजिटल विभाजन का अध्ययन: ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों का तुलनात्मक मूल्यांकन।” *Frontiers in Sociology*, 8, 1145221। DOI: 10.3389/fsoc.2023.1145221।



INTERNATIONAL JOURNAL OF ARTS, COMMERCE & EDUCATION

A Multidisciplinary Peer-Reviewed, Refereed, Open Access Journal,
<https://avjournals.com/> e-ISSN: 2347-7687, Vol 13, Issue 2, July-Dec. 2025

16. खावरिन, मोहम्मद खालिद एवं स्तानिकजई, अहमद नबी (2023)। “सोशल मीडिया की चुनौतियाँ: भारतीय संस्कृति से संबंधित साहित्य का व्यापक अवलोकन।” *Global Journal of Social Sciences*, 6(3), 15-22।
17. सरवताय, देविना, ली, जे. एवं काये, डी. बी. वी. (2023)। “भारत में बच्चों की टिकटॉक संस्कृति: पहुँच, उपयोग और अनुभवों का अध्ययन।” *Media International Australia*, 186(1)। DOI: 10.1177/1329878X221127037।
18. सरवताय, देविना एवं रमन, उषा (2022)। “भारत में युवा वर्ग और सोशल मीडिया की उपस्थिति का दैनिक प्रबंधन।” *Information, Communication & Society*, 25(4), 536-551। DOI: 10.1080/1369118X.2021.1988129।
19. नाग, देबांजना (2021)। “वैश्वीकरण का संचार एवं संस्कृति पर प्रभाव: भारतीय परिदृश्य।” *Glocalism: Journal of Culture, Politics and Innovation*, अंक 3। DOI: 10.12893/gjcpi.2021.3.5।